कर्म और आराधना

डॉ. गंगाप्रसाद गुप्त 'बरसैंया'

कर्म और आराधना

दुनिया सब कुछ स्वीकार नहीं करती। यदि सभी स्वीकार किया जाता तो अच्छे-बुरे, उचित अनुचित, हित-अहित की पहचान न हो पाती। दुनिया वही स्वीकार करती है जो सत्य पर आधारित तथा सर्वकल्याणकारी भावना से परिपूर्ण हो। व्यक्ति का मन अनेक प्रसंगों व अनुभवों से गुजरता है। वह सृष्टि के अनन्त विस्तार को खुली आंखों से देखता है। इनमें से ही जीवन के स्वीकार्य सूत्र निकलते हैं

कर्म और आराधना में डॉ. वरसैंया ने देखे-सुने, जाने-पहचाने अनुभवों को ही इन छोटे-छोटे आलेखों में प्रस्तुत किया है जिसमें जीवन को उदार, संस्कारी और आदर्श बनाने की भावना प्रमुख है। बुराइयों, संकीर्णताओं से वचने-वचाने की चेतना और शुभ को स्वीकार करने की आकांक्षा है। कभी-कभी एक शव्द, एक विचार, एक प्रसंग जीवन को वदल देता है। ऐसे कई उदाहरण हमारे इतिहास में हैं।

जीवन को आलोकित करने वाले अनेक तथ्य **कर्म और आराधना** के इंन आलेखों में मिलेंगे।

मूल्य : 150.00 रुपये

ISBN : 81-8160-047-9

कर्म और आराधना

डॉ. गंगाप्रसाद गुप्त 'बरसैंया'

ISBN : 81-8160-047-9

© डॉ. गंगाप्रसाद गुप्त 'बरसैंया'

संस्करण : 2006

प्रकाशक

सार्थक प्रकाशन

100ए, गौतम नगर,
नई दिल्ली-110 049
दूरभाष : 26 56 73 17

लेज़र कम्पोजिंग
अंकित कम्प्यूटर्स
दिल्ली-110 094

मुद्रक
बालाजी ऑफसेट,
नवीन शाहदरा, दिल्ली-110 032

मूल्य : एक सौ पचास रुपये

Karm our Aradhana
(A Collection of Essays)
by Dr. Gangaprasad Gupta 'Barsaiyan' Price : Rs. 150.00

अनुभवों की आग

इस संग्रह में एंकलित्त सभी आलेख चिन्तन के रूप में आकाशवाणी, छतरपुर द्वारा समय-समय पर प्रसारित होते रहे हैं। चिन्तन एक गंभीर बौद्धिक कार्य है। खट्टे-मीठे अनुभवों से गुजरते हुए तर्क-वितर्क की कसौटी पर कसने के बाद ही किसी निष्कर्प पर पहुंचा जा सकता है। यही निष्कर्प चिन्तन बनता है। मन की भीतरी दुनिया को बाहरी दुनिया के सामने सार्वजनिक करना सरल कार्य नहीं है। एक-एक शब्द, एक-एक भाव, एक-एक विचार को हजार बार परखना पड़ता है, क्योंकि बाहर की दुनिया के सामने कोई विचार पूरी शक्ति के साथ तभी ठहर सकता है जब वह सुदीर्घ अनुभवों की आग में तपकर परिपक्व बना हो।

दुनिया सब कुछ स्वीकार नहीं करती। यदि सभी स्वीकार किंया जाता तो अच्छे-बुरे, उचित अनुचित, हित-अहित की पहचान न हो पाती। दुनिया वही स्वीकार करती है जो सत्य पर आधारित तथा सर्वकल्याणकारी भावना से परिपूर्ण हो। व्यक्ति का मन अनेक प्रसंगों व अनुभवों से गुजरता है। वह सृष्टि से अनन्त विस्तार को खुली आंखों से देखता है। इनमें से ही जीवन के स्वीकार्य सूत्र निकलते हैं।

अपने देखे-सुने, जाने-पहचाने अनुभवों को ही इन छोटे-छोटे आलेखों में मैंने प्रस्तुत किया है जिनमें जीवन को उदार, संस्कारी और आदर्श बनाने की भावना प्रमुख है। बुराईयों, संकीर्णताओं से बचने-बचाने की चेतना और शुभ को स्वीकार करने की आकांक्षा है। कभी-कभी एक शब्द, एक विचार, एक प्रसंग जीवन को बदल देता है। ऐसे कई उदाहरण हमारे इतिहास में हैं। यदि ये आलेख पाठकों के मर्म को छू सकें तो मेरा श्रम सार्थक होगा। मेरा विश्वास है कि जीवन को आलोकित करने वाले अनेक तथ्य इन आलेखों में मिलेंगे। इन्हें सार्वजनिक करते हुए मुझे आज अतीव सुख की अनुभूति हो रही है। इनमें कुछ भी नया नहीं है। सब जाना-पहचाना है। भाषा और अनुभवों का अन्तर ही तो किसी भी रचना को एक अलग अस्तित्व प्रदान करता है। इन आलेखों को रचना क्रम से संकलित नहीं किया गया। मुझे स्वयं ज्ञात नहीं हैं कि इनमें से कौन और कब लिख गया। इन्हें पुरानी फाइलों से निकालकर पुस्तकाकार छपवाने का आग्रह मेरे सुपुत्र चिरंजीव अभिलाष का वर्षो से रहा है। उसमें भी साहित्यिक एवं कलात्मक अभिरुचि है। सर्जना से उसका लगाव है। उसकी जिद

न होती तो ये शायद फाइलों से बाहर न आ पाते। मगध प्रकाशन, दिल्ली से जुड़े श्री सुरंजन जी ने इन्हें सर्वप्रथम प्रकाशित करने की व्यवस्था की। वे स्वयं सुरूचि सम्पन्न समर्पित साहित्यकार हैं। इन दोनों को धन्यवाद और शुभकामनाएं।

आकाशवाणी, छतरपुर के प्रति तो आंतरिक कृतज्ञता ज्ञापित करना मेरा कर्त्तव्य ही है–विशेषकर केन्द्र निदेशक श्री राजेन्द्र प्रसाद (अब सेवा निवृत्त) सहायक केन्द्र निदेशक (अब निदेशक, दूरदर्शन भोपाल) श्री लीलाधर मडलोई तथा कार्यक्रम अधिकारी (अब सेवा निवृत्त) श्री एल.के. बहल के प्रति। यदि इन अधिकारियों ने इन्हें लिखने के लिए प्रेरित (एक सीमा तक बाध्य) न किया होता तो शायद ये न लिखे जाते। भावना के रूप में भीतर पच जाते। कई आलेख पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित भी हो चुके हैं। अतः इन सभी के प्रति मेरा हार्दिक आभार। कई कृतियों, कृतिकारों, चिन्तकों-साधकों का प्रभाव भी इन पर हो सकता है। उन सभी को मेरा विनम्र नमन।

पाठकों से इतना आग्रह अवश्य है कि इन्हें पढ़ने के बाद अपनी प्रतिक्रियाओं से मुझे अवगत करायें ताकि मैं उनका लाभ उठा सकूं।

–डॉ. गंगाप्रसाद गुप्त 'बरसैंया'

अनुक्रम

कर्म और आराधना	13
श्रमेव जयते	15
मंजिल	17
बड़प्पन	19
परीक्षा	22
प्रासंगिकता	24
सद्संकल्प	26
अहिंसक आंखें	28
निन्दा और निष्ठा	30
भावना	32
एकता	35
राष्ट्रीयता	37
असंतोष	40
अहंकार	42
अमरता	44
मितव्ययिता बनाम कृपणता	46
पहचान	48
विपत्ति और संघर्ष	51
अंधविश्वास	53
लोभ	55
लोकविश्वास और रूढ़ियां	57
स्वभाव और सुभाव	59
धर्मादा	62
विवाह	64
दहेज	66

शिष्टाचार ✓ 69
विश्वसनीयता 72
आत्मसंकल्प 74
आत्मविश्वास ✓ 76
साहित्य-सृजन ✓ 79
शब्दों की अवमानना ✓ 81
परम्परा और प्रयोजन 83
लक्ष्मी-पूजन ✓ 85
रामनवमी 87
होलिकोत्सव 90
गुरु महिमा 93
हिन्दी दिवस 95
पूजा : कितनी सार्थक और कितनी निरर्थक ✓ 97
लीक ✓ 99
पुण्य ✓ 101
संरक्षण 103

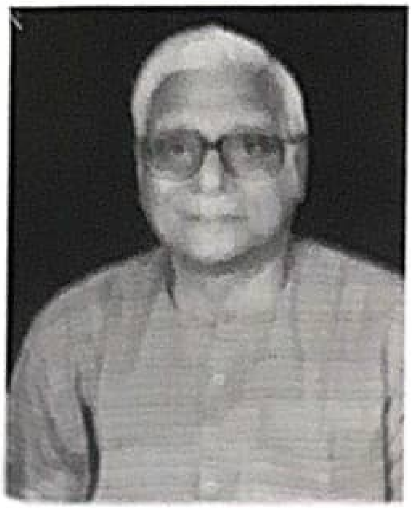

डॉ. गंगाप्रसाद गुप्त ''बरसैया''

जन्म स्थान : भौरी (जिला बाँदा—अब चित्रकूट उ.प्र.)
जन्म तिथि : 6 फरवरी, 1937
पद : सेवानिवृत्त स्नातकोत्तर प्राचार्य
योग्यता : एम.ए. (हिन्दी)।
पी.एच-डी. (सन् 1064) जबलपुर विश्वविद्यालय, विषय : हिन्दी साहित्य में व्यक्तिवादी निबंध और निबंधकार।

कृतियां : हिन्दी साहित्य में निबंध और निबंधकार (शोध-प्रबंध), छत्तीसगढ़ का साहित्य और उसके साहित्यकार, आधुनिक काव्य-संदर्भ और प्रकृति, हिन्दी के प्रमुख एकांकी और एकांकीकार, बुन्देली : एक भाषा वैज्ञानिक अध्ययन, मानस मनीषा, बुन्देलखण्ड के अज्ञात रचनाकार, चिन्तन अनुचिन्तन, अथ काटना कुत्ते का भइया जी को, रचना से रचना तक, कभी-कभी यह भी आदि उच्चकोटि की 25 पुस्तकें। लगभग 220 शोध-परक निबंधों का देश की प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन। 12 शोध छात्रों को निर्देशन में पी-एच. डी. उपाधि प्राप्त।

अब तक 20 लघुशोध प्रबंध निर्देशन में प्रस्तुत।

नव-ज्योति 'संज्ञा', सर्जना तथा 'बन्धु' पत्रिकाओं का संपादन।

अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, जीवाजी विश्वविद्यालय के पंजीकृत शोध-निर्देशक, परीक्षक आदि।

सम्मान : साहित्य सम्मेलनों, नगरपालिकाओं, हिन्दी प्रचारिणी सभा आदि द्वारा साहित्य श्री, तुलसी पुरस्कार, विद्रोही पुरस्कार, साहित्य भारती आदि पुरस्कारों से अलंकृत।

सार्थक प्रकाशन
100 ए, गौतम नगर, नई दिल्ली-110 049

ISBN 81-8160-047-9
9788181600479

Price: Rs. 150/-